[This question paper contains 4 printed pages.]

1364 *आपका अनुक्रमांक* .....

B.A. (Hons.) बी. ए. (ऑनर्स) / II **D**

HINDI – Paper IV

हिंदी – प्रश्नपत्र IV

(हिन्दी गद्य साहित्य)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 75*

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

1. निम्नलिखित की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) यह रहस्य मानव हृदय का है, मेरा नहीं। राजकुमार, नियमों से यदि मानव हृदय बाध्य होता, तो आज मगध के राजकुमार का हृदय किसी राजकुमारी की ओर न खिंचकर एक कृषक-बालिका का अपमान करने न आता। मधूलिका उठ खड़ी हुई। चोट खाकर राजकुमार लौट पड़ा। किशोर किरणों में उसका रत्न-किरीट चमक उठा। वह अश्ववेग से चला जा रहा था और मधूलिका निष्ठुर प्रहार करके स्वयं आहत न हुई ? उसके हृदय में टीस-सी होने लगी। वह सजल नेत्रों से उड़ती हुई धूल देखने लगी।

अथवा

खचाखच भरे प्लेटफार्म पर शायद इसी बात की चर्चा चल रही थी कि पीछे क्या हुआ है। प्लेटफार्म पर खड़े दो-तीन खोमचेवालों पर मुसाफिर टूटे पड़ रहे थे। सभी को सहसा भूख और प्यास परेशान करने लगी थी। इसी दौरान तीन-चार पठान हमारे डब्बे के बाहर प्रगट हो गए और खिड़की में से झाँक-झाँककर अन्दर देखने लगे। अपने पठान साथियों पर नज़र पड़ते ही वे उनसे पश्तो

P.T.O.

में कुछ बोलने लगे। मैंने घूमकर देखा, बाबू डब्बे में नहीं था। न जाने कब वह डब्बे में से निकल गया था। मेरा माथा ठनका। गुस्से से वह पागल हुआ जा रहा था। न जाने क्या कर बैठे। पर इस बीच डब्बे के तीनों पठान, अपनी-अपनी गठरी उठाकर बाहर निकल गए और अपने पठान साथियों के साथ गाड़ी के अगले किसी डब्बे की ओर बढ़ गए। जो विभाजन पहले प्रत्येक डिब्बे के भीतर होता रहा था, अब सारी गाड़ी के स्तर पर होने लगा था।

(ख) बुद्धि अगर स्वार्थ से मुक्त हो, तो हमें उनकी प्रभुता मानने में कोई आपत्ति नहीं। समाजवाद का यही आदर्श है। हम साधु-महात्माओं के सामने इसीलिए सिर झुकाते हैं कि उनमें त्याग का बल है। इसी तरह हम बुद्धि के हाथ में अधिकार भी देना चाहते हैं, सम्मान भी, नेतृत्व भी, लेकिन सम्पत्ति किसी तरह नहीं। बुद्धि का अधिकार और सम्मान व्यक्ति के साथ चला जाता है, लेकिन उसकी सम्पत्ति विष बोने के लिए, उसके बाद और भी प्रबल हो जाती है। बुद्धि के बगैर किसी समाज का संचालन नहीं हो सकता। हम केवल इस बिच्छू का डंक तोड़ देना चाहते हैं।

अथवा

जिसे संसार दुख कहता है, वही कवि के लिए सुख है। धन और ऐश्वर्य, रूप और बल, विद्या और बुद्धि, ये विभूतियाँ संसार को चाहे कितना ही मोहित कर लें, कवि के लिए यहाँ ज़रा भी आकर्षण नहीं है। उसके मोद और आकर्षण की वस्तु तो बुझी हुई आशाएँ और मिटी हुई स्मृतियाँ और टूटे हुए हृदय के आँसू हैं। जिस दिन इन विभूतियों में उसका प्रेम न रहेगा, उस दिन वह कवि न रहेगा। दर्शन जीवन के इन रहस्यों से केवल विनोद करता है, कवि उनमें लय हो जाता है। मैंने आपकी दो-चार कविताएँ पढ़ी हैं और उनमें

जितनी पुलक, जितना कम्पन, जितनी मधुर व्यथा, जितना रूलाने वाला उन्माद पाया है, वह मैं ही जानता हूँ। प्रकृति ने हमारे साथ कितना बड़ा अन्याय किया है कि आप-जैसी कोई दूसरी देवी नहीं बनायी।

(ग) सब प्रकार के शासन में - चाहे धर्म शासन हो, चाहे राज-शासन या सम्प्रदाय-शासन मनुष्य जाति के भय और लोभ से पूरा काम लिया गया है। दण्ड का भय और अनुग्रह का लोभ दिखाते हुए राज-शासन तथा नरक का भय और स्वर्ग का लोभ दिखाते हुए धर्म शासन और मत-शासन चलते आ रहे हैं। इनके द्वारा भय लोभ का प्रवर्तन उचित सीमा के बाहर भी प्राय: हुआ है और होता रहता है। जिस प्रकार शासक वर्ग अपनी रक्षा और स्वार्थ-सिद्धि के लिए भी इनसे काम लेते आए हैं उसी प्रकार धर्म-प्रवर्तक और आचार्य अपने स्वरूप-वैचित्र्य की रक्षा और अपने प्रभाव की प्रतिष्ठा के लिए भी। शासकवर्ग अपने अन्याय और अत्याचार के विरोध की शान्ति के लिए भी डराते और ललचाते आए हैं। मत-प्रवर्तक अपने द्वेष और संकुचित विचारों के लिए भी जनता को कँपाते और ललकाते आए हैं।

अथवा

अपने लड़के घर लौट आए, बारिश से नहीं संगीत से भीगकर, मेरी दादी-नानी के गीतों के राम, लखन और सीता अभी भी वन-वन भीग रहे हैं। तेज बारिश में पेड़ की छाया और दुखद हो जाती है, पेड़ की हर पत्ती से टप्-टप् बूँदे पड़ने लगती हैं, तने पर टिकें तो उसकी हर नस-नस से आप्लावित होकर पीठ गलाने लगती है। जाने कब से मेरे राम भीग रहे हैं और बादल हैं कि मूसलाधार ढरकाये चले जा रहे हैं, इतने में मन में एक चोर धीरे

से फुसफुसाता है, राम तुम्हारे कब से हुए, तुम, जिसकी बुनाहट पहचान में नहीं आती, जिसके व्यक्तित्व के ताने-बाने तार-तार होकर अलग हो गए हैं, तुम्हारे कहे जाने वाले कोई हो भी सकते हैं कि वह तुम कह रहे हो, मेरे राम ! और चोर की बात सच लगती है, मन कितना बटा हुआ है, मनचाही और अनचाही दोनों तरह की हजार चीजों में। (7×3=21)

2. 'बंग विच्छेद' निबंध के आधार पर बालमुकुंद गुप्त की निबंध शैली का विवेचन कीजिए।

अथवा

'मजदूरी और प्रेम' निबंध के केन्द्रीय विचार का प्रतिपादन कीजिए। (15)

3. 'गोदान कृषक जीवन की त्रासद कथा है', विवेचन कीजिए।

अथवा

'होरी स्वीकार की मनःस्थिति को उद्घाटित करता है और गोबर विद्रोह की' - स्पष्ट कीजिए। (15)

4. 'मलबे का मालिक' कहानी विभाजन की त्रासदी को अभिव्यक्त करती है' - विवेचन कीजिए।

अथवा

'प्रेमचंद का शिल्प सादगी में से गढ़ा गया है' ईदगाह कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (15)

5. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए :-

(क) 'कालचक्र का चक्कर' निबंध का प्रतिपाद्य

(ख) 'गोदान' शीर्षक की सार्थकता

(ग) 'लंदन की एक रात' कहानी में व्याप्त अकेलापन (9)